|  |
| --- |
| 05. Oktober 2025 |
| **27. Sonntag im Jahreskreis C Erntedank** |
| Erste Lesung: Hab 1,2-3;2,2-4; Zweite Lesung: 2 Tim 1,6-8.13-14; Evangelium: Lk 17,5-10 |
| Eröffnung: | GL 466, 1-5 | Herr, dich loben die Geschöpfe |
|  | GL 467, 1+5+6 | Erfreue dich, Himmel |
|  | GL 348, 1-3 | Nun bitten wir den Heiligen Geist |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 164 | Der in seinem Wort uns hält |
|  | GL 156 | Kyrie eleison |
| Gloria: | GL 167 | Dir Gott im Himmel Preis uns Ehr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 95,1-2.6-7c.7d-9 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 312, 7 | Herr, du hast Worte |
|  | oder |  |
|  | GL 448, 2-4 | Herr, gib uns Mut |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 7 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Das Wort des Herrn bleibt in Ewigkeit,* |
|  | *das Evangelium, das euch verkündet wird.* |
|  |  |
| Credo: | GL 177, 1+2 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 422, 1+3 | Ich steh vor dir mit leeren Händen |
|  | GL 457, 1-3 | Suchen und fragen |
|  | GL 474 | Wenn wir das Leben teilen |
|  | GL 425, 1-5 | Solang es Menschen gibt auf Erden |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 193 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 139 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 377, 1+2! | O Jesu, all mein Leben bist du |
|  | GL 414 | Herr, unser Herr |
|  | GL 446, 1+4 | Lass uns in deinem Namen |
|  | GL 484, 1+5 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 619, 1+2 | Alles, was Odem hat |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 423, 1-3 | Wer unterm Schutz |
|  | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |
|  | GL 403, 1-4 | Nun danket all und bringet Ehr |
|  | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott |
|  | GL 830, 1+10 | Maria, wir dich grüßen |
|  | Marienlied oder (Schutz-)Engellied |